

लोग आज भी उम्मीद से हैं

उम्मीद से हर कोई था
और हर किसी के पास अपने-अपने कारण थे
लोग आज भी उम्मीद से हैं

आकाश का रंग कुछ-कुछ फीका पड़ गया था
पीलापन लिये मटमैला-सा
धरती पर खामोशी छायी हुई थी
इधर बाजार में पक्की खबर के तौर पर
अफवाह फैल गयी थी कि
अब आसमान में पर मारना परिंदों के लिए
बहुत खतरनाक हो गया है
लेकिन बाजार के सहमने का कारण
यह था कि
यह बात तेजड़ियों और मंदड़ियों को ही नहीं
परिंदों तक को मालूम हो गयी थी और वे यकीन से थे

दफ्तरों में बाबू लोग अवश्य
इस अफवाह पर ध्यान नहीं दे रहे थे
और बाजार में इस बात पर संतोष भी था

दलालों को उम्मीद थी
क्योंकि दलाल ही अंत-अंत तक
उम्मीद को बचाये रख सकते हैं
उम्मीद कि आकाश का रंग जल्दी ही नीला हो जायेगा
जल्दी ही धरती की खामेशी भी टूटेगी
और यह सब बाबुओं के गंभीर होने के पहले होगा
लेकिन बड़े दलाल इसे परिंदों के रुख पर निर्भर मानते थे

उम्मीद बड़े जमीनदारों को भी थी

और वे इसे अपने फॉर्म हाउस की
घास के रुख पर निर्भर मानते थे

देश के किसान इस पूरे संदर्भ से बेखबर थे
और आकाश के उदास मिजाज के बारे में
उनका अपना पारंपरिक विश्लेषण था
और उम्मीद के अपने कारण थे
जो जाहिर है दलालों के कारणों से भिन्न थे
उम्मीद कि जल्दी ही आसमान का रंग मेघिल हो जायेगा
और धरती मुस्कुरायेगी
लेकिन यह सब
उनके गांव में स्कूल खुलने पर निर्भर करेगा

उम्मीद से हर कोई था
और हर किसी के पास अपने-अपने कारण थे
लोग आज भी उम्मीद से हैं